Volume 3; Issue 1
January to March 2026
E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika
संस्कृति-संवाहिका

Peer Reviewed Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका

E-ISSN: 3048-6742

https://sanskritisamvahika.in

Volume 3; Issue 1; January to March, 2026; Page No. 36-48

Peer Reviewed, Indexed and Refereed Journal

नाट्यशास्त्र में वर्णित करण और अङ्गहार का वैचारिक दृष्टिकोण

अभिलाषा पटेल

शोधच्छात्रा

ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज

प्रयागराज

सारांश

आचार्य भरतमुनि द्वारा रचित ***नाट्यशास्त्र*** भारतीय नाट्य एवं नृत्य-परम्परा का मूलग्रन्थ है, जिसमें आङ्गिक गतिशीलता का सूक्ष्म और वैज्ञानिक विवेचन प्रतिपादित है। नाट्यशास्त्र में **३६ अध्याय** तथा लगभग **६०००** श्लोक है। **नाट्यशास्त्र** में प्रतिपादित **१०८ करण**, और **३२ अङ्गहार** भारतीय नृत्य की प्राचीन एवं अत्यन्त विकसित शारीरिक भाषा के अङ्ग हैं। यह शोध-पत्र नाट्यशास्त्र में वर्णित **करण और अङ्गहार** के *वैचारिक दृष्टिकोण* का विश्लेषण प्रतिपादित करता है—अर्थात् इन गतियों के पीछे निहित *दर्शन*, ***सौन्दर्यशास्त्र, मनोवैज्ञानिक आधार, रचनात्मक सिद्धान्त, तथा नाट्य-उद्देश्य*** का अन्वेषण। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया है कि **करण** केवल तकनीकी नृत्य-गतियाँ नहीं हैं, बल्कि मानव-भाव, लौकिक-अलौकिक चेतना और नाट्य-अभिव्यक्ति का दार्शनिक रूप हैं। साथ ही इसमें अङ्गहार की संरचना, उनकी संयुक्त गतिशीलता, और नाट्याभिनय में उनकी अनिवार्यता का परीक्षण भी किया गया है। अन्ततः अध्ययन यह सिद्ध करता है कि **करण और अङ्गहार** का मूल उद्देश्य दर्शक में ***रसोत्पत्ति, सौन्दर्य-अनुभूति तथा अनुभावों*** *का सम्प्रेषण* है। आधुनिक भारतीय नृत्य-शास्त्र और सांस्कृतिक अध्ययन में इनकी पुनर्स्थापना तथा उपयोगिता आज भी अत्यन्त प्रासङ्गिक है।

सङ्केत शब्द : नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, करण, अङ्गहार, नृत्य-कला, सौन्दर्यशास्त्र, सङ्गीतकला

परिचय

भारतीय नाट्य-परम्परा विश्व में सर्वाधिक प्राचीन और विकसित नृत्य-दर्शन का उदाहरण है। **नाट्यशास्त्र** को "**पञ्चम वेद**" भी कहा गया है, -

" सर्वशास्त्रार्थसम्पन्नं सर्वशिल्पप्रवर्तकम् ।

नाट्याख्यं पञ्चमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्'॥" (ना०शा०१/१६)[1]

क्योंकि यह वेदों के ज्ञान को कलात्मक रूप से जनसामान्य तक प्रेषित करने का माध्यम है। यही कारण है कि नाट्यशास्त्र केवल तकनीकी नियमों का ग्रन्थ नहीं, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक-दर्शन है। इस ग्रंथ में वर्णित '**करण**' **और '**अङ्गहार**'** शारीरिक अभिव्यक्ति के सूक्ष्मतम रूप हैं , जिन्हें आचार्य भरतमुनि ने अत्यन्त वैज्ञानिक और व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत किया है ,**करणों और अङ्गहारों** का अध्ययन केवल शारीरिक गतियों की समझ नहीं, बल्कि यह भारतीय सौन्दर्यशास्त्र, मनोविज्ञान और दार्शनिक प्रतीकवाद से जुड़ा हुआ विषय है। नृत्य में अङ्ग ही माध्यम है, परंतु उससे सञ्चालित भाव, विचार, और रस ही नाट्य का अन्तिम लक्ष्य हैं। इसलिए **करण और अङ्गहार** का वैचारिक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि आचार्य भरतमुनि के लिए शारीरिक गतियाँ केवल तकनीकी भाव-सम्प्रेषण की सार्थक प्रक्रिया थीं। इस शोध-पत्र का उद्देश्य नाट्यशास्त्र में वर्णित करण और अङ्गहार के पीछे निहित वैचारिक (दर्शन-आधारित) सिद्धान्तों का विश्लेषण करना है और यह प्रदर्शित करना है कि ये गतियाँ नाट्यकला में क्यों अनिवार्य मानी गईं

करण का स्वरूप -

करण और **अङ्गहार** पर प्राचीन ग्रन्थों और आधुनिक नृत्य-विशेषज्ञों ने विविध व्याख्याएँ की हैं। जो निम्नलिखित प्रकार से है –

आचार्य भरतमुनि कृत **नाट्यशास्त्र** में बताया गया है कि नृत्त में **हस्त** और **पाद** की गतियों एवं स्थितियों को **करण** कहते हैं -

"हस्तपादसमायोगोनृत्यस्य करणं भवेत्"॥(ना०शा० ४/३०)[2]

[1] नाट्यशास्त्र,   पारस नाथ द् ववेदी (१/१६)

[2] नाट्यशास्त्र ,पारस नाथ द् ववेदी (४/३०)

अभिनवगुप्त – " हस्तपादसमायोग:।" [3] (ना०शा० पृष्ठ सङ्ख्या २८२)[३]

नृत्य में हस्तपादादि का समायोग **करण** है।

कपिल वात्स्यायन-

'**कपिला वात्स्यायन**' ने अपनी पुस्तक **Classical Indian Dance in Literature and Art में** इन गतियों को भारतीय नृत्य-भाषा की "**kinetic vocabulary**" कहा है। [4]

महर्षि पतञ्जलि, और रमण जैसे विद्वानों ने इन गतियों को शारीरिक-व्यायाम, मनोवैज्ञानिक ऊर्जा और यौगिक चेतना से जोड़कर देखा है -

" स्थिरसुखमासनम् "।(पातञ्जल योगदर्शन २/४६) [5]

इन सभी अध्ययन से ज्ञात होता है कि करण और अङ्गहार भारतीय नृत्य की प्रतीक-भाषा के मूल स्तंभ हैं।

करण का लक्षण

आचार्य भरतमुनि करण का लक्षण प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि सम्पूर्ण अङ्गहारों की निष्पत्ति करणों द्वारा होती है इसलिए उनके नाम और कर्म क्रिया की सम्यक रूप से व्याख्या करते हैं और नृत्य में हस्त और पाद की गतियों में स्थितियों को **करण** कहते हैं-

" सर्वेषामङ्गहाराणां निष्पत्ति: करणैर्यत:। ।(ना०शा०४/२९) [6]

तान्यत: सम्प्रवक्ष्यामि नामत:कर्मतस्तथा ।

हस्तपादसमायोगोनृत्यस्य करणं भवेत् "।।(ना०शा० ४/३०)। [7]

आचार्य अभिनवगुप्त कहते हैं कि नृत्त में हस्तपादादि का समायोग ही **करण** है,क्रिया ही **करण** है । अङ्ग के विलास के साथ प्रक्षेपण ही **करण** है ।हस्त से उपलक्षित अङ्ग के पूर्वभाग के अङ्गों एवं उपाङ्गो आदि को तथा पाद से उपलक्षित शरीर के अपर भाग के **अङ्ग कटि ,उरु, पाद** आदि की सङ्गति के साथ और अत्रुटित रूप से सञ्चालन की योजना **करण** कहलाती है।

---

३ नाट्यशास्त्र , पारस नाथ द् ववेदी (प्रथम भाग पृष्ठ सङ्ख्या २८२)

[4] क पल वात्स्यायन- Classical Indian Dance in Literatur and Art

[5] पातञ्जल ,योगदर्शन (२/४६)

[6] नाट्यशास्त्र पारस नाथ द् ववेदी (४/२९)

[7] नाट्यशास्त्र पारस नाथ द् ववेदी (४/३०)

करण के भेद

आचार्य भरतमुनि ने **नाट्यशास्त्र** में **१०८** करणों की सङ्ख्या को प्रतिपादित किया है जिनके नाम निम्नवत् है-

तलपुष्पपुटं पूर्व' वर्तितं .... गङ्गावतरणं चैवेत्युक्तमष्टाधिकं शतम् । अष्टोत्तरशतं ह्येतत्करणानां मयोदितम् ॥(ना०शा०४/३४....५५)[8]

- १. तलपुष्पपुट २. वर्तित ३. बलितोरु ४अपविद्ध ५. समनख ६. लीन ७. स्वास्तिकरेचित ८.मण्डलस्वस्तिक ९. निकुट्टक १०. अर्धनिकुट्टक ११. कटिछिन्न १२. अर्धरेचित १३. वक्षः स्वस्तिक १४. उन्मत्त १५ स्वस्तिक १६. पृष्ठस्वस्तिक १७. दिक्स्वस्तिक १८. अलात १९. कटीसम २०. आक्षिप्त रेचित ११. विक्षिप्ताक्षिप्तक २२. अर्धस्वस्तिक २३ अञ्चित २४. भुजङ्ग-त्रासित २५. ऊर्ध्वजानु २६. निकुञ्चित २७. मत्तलि २८. अर्धमत्तलि २९. रेचकनिकुट्ट ३०. पादापविद्धक ३१ वलित ३२. घूर्णित ३३. ललित ३४. दण्ड पक्ष ३५. मुजङ्गत्रस्तरेचित ३६० नूपुर ३७. वैशाखरेचित ३८. भ्रमर ३९ चतुर ४०. भुजङ्गाञ्चित ४१. दण्डरेचितक ४२. वृश्चिककुट्टित४३. कटिभ्रान्त ४४. लतावृश्चिक ४५.छिन्न ४६ वृश्चिकरेचित ४७वृश्चिक ४८. व्यसित ४९. पार्श्वनिकुट्टक ५०. ललाटतिलक ५१ क्रान्त ५२. कुञ्चित ५३. चक्र-मण्डल ५४ उरोमण्डल ५५ आक्षिप्त २६ तालविलासित १७. अर्गल १८. विक्षिप्त ५९ आवर्त्तक ६०. डोलपादक ६१ विवृत ६२. विनिवृत्त ६३. पार्श्वक्रान्त ६४ निशुम्भित ६५. विद्युद्भ्रान्त ६६. अतिक्रान्त ६७. विवर्त्तितक ६८. गजक्रीडितक ६९. तलसंस्फोटित ७०. गरुड़प्लुतक७१. गण्डसूची ७२. परिवृत्त ७३. पार्श्वजानु ७४ गृधाबलीनक ७५. सन्नत ७६ सूची ७७. अर्धसूची ७८. सूचीबिद्ध ७९ अपक्रान्त ८०. मयूर ललित ८१. सर्पित ८२. दण्डपाद ८३ हरिणप्सुत८४ प्रेङ्खोलित ८५. नितम्ब ८६ स्खलित ८७. कटिहस्तक ८८. प्रसर्पितक २९. सिंहविक्रीडित ९०. सिंहाकर्षित ९१. उपसृत ९३. तलसंघट्टित ९४. जनित ९५ अवहित्थक ९६ निवेश ९७. एलकाक्रीडित ९८ उरुद्वृत्त९९ मदस्खलितक १०० विष्णुक्रान्त १०१. सम्भ्रान्त १०२. विष्कम्भ १०३ उद्घट्टित १०४. वृषभक्रीडित १०५. लोलित १०६. नागापसर्पित १०७. शकटास्य १०८. गङ्गावतरण।

करण का प्रयोग –

[8] नाट्यशास्त्र (४/३४...५५) पारस नाथ द् ववेदी

आचार्य भरतमुनि ने **नाट्यशास्त्र** में करणों का प्रयोग **चारी, शस्त्रयुद्ध और नृत्य** के लिए बताया है साधारणतः सभी करणों में वाम हस्त वक्षस्थल पर स्थापित करना चाहिए और वामेतर हस्त, पाद के अनुसार स्थापित करना चाहिए। इतना ही नहीं हस्त और पाद की गतियां भी **कटि, पार्श्व , वक्षस्थल,पीठ और उदर** की गतियां के साथ सामञ्जस्य स्थापित करते हुए होना चाहिए-

" कटिपादप्रचारन्तु कटिपार्श्वोरुसंयुतम्" ।। (ना०शा०पृष्ठ सं०२८९)[9]

आचार्य भरतमुनि ने **महासामान्य करण** को भी प्रतिपादित करते हुए कहा है कि जो स्थान, चरियां और नृत्तहस्त है, उन्हें नृत्तमातृकाएं समझनी चाहिए । उनके योग में भी करण का निर्माण होता हैं-

"यानि स्थानानि याश्चार्यो नृत्तहस्तास्तथैव च ।

सा मातृकेति विज्ञेया तद्योगात्करणं भवेत्" ।।(ना०शा०४/६०)[10]

शरीर की जो सीधी मुद्रा में **कर्ण** , **शीर्ष** ,**कन्धे** ,**कोहनी** और **वक्षस्थल** सब कटि की सीध में होते हैं उसे **सौष्ठव** कहते हैं । इस प्रकार आचार्य भरतमुनि ने **करण** को **नाट्यशास्त्र** में पुष्ट किया है।

अङ्गहार का स्वरूप -

आचार्य भरतमुनि के **नाट्यशास्त्र** के **चतुर्थ अध्याय** में यह विवरण आया है कि हिमालय पर पूर्वरङ्ग प्रक्रिया सम्पादित करने के उपरान्त ब्रह्मा की आज्ञा से आचार्य भरतमुनि ने अमृत मन्थन का समवकार महादेव जी के समक्ष मन्चित किया और वहीं पर त्रिपुरदाह नाम का डिम रूपक का अभिनय भी किया गया,इन रूपकों के प्रदर्शन से शिवजी बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि यह **करणों** और **अङ्गहारों** से समृद्ध अभिनय मुझे अत्यधिक रमणीय लगा ।इनका प्रयोग मैं अपने ताण्डव नृत्य में किया करूंगा। इसी प्रसङ्ग में यह भी कहा गया कि जो पूर्वरङ्ग आप लोगों ने किया है इसका अब चित्र पड़ जाएगा और उन्होंने ब्रह्मा के निवेदन पर तण्डु को आदेश दिया कि आचार्य भरतमुनि को **अङ्गहार** सिखाओ ।तब तण्डु ने आचार्य भरतमुनि को **अङ्गहार**, **करण**, **रेचक** इन तीनों की शिक्षा दी ।**(ना०शा० पृष्ठ सङ्ख्या – २७४)**[11]

---

[9] नाट्यशास्त्र पारस नाथ द् ववेदी (प्रथम भाग पृष्ठ सङ्ख्या -२८९)

[10] नाट्यशास्त्र पारस नाथ द् ववेदी (४/६०)

[11] नाट्यशास्त्र (प्रथम भाग पृष्ठ सङ्ख्या -२७४)

अङ्गहार का लक्षण -

"द्वे नृत्त करणे चैव भवतो नृत्तमातृका।

द्वाभ्यां त्रिभिश्चतुर्भिर्वाप्यङ्ग हारस्तु मातृभिः ॥(ना०शा०४/३१)[12]

'त्रिभिः कलापकं चैव चतुर्भिः षण्डकं भवेत्।

पञ्चैव करणानि स्युः सङ्घातक इतिस्मृत ॥(ना०शा० ४/३२) [13]

षडिभर्वा सप्तभिर्वापि अष्टभिर्नवभिस्तथा।

करणैरिह संयुक्ता अङ्गहाराः प्रकीर्तिता ॥" (ना०शा०४/३३)[14]

अर्थात्-दो नृत्त-करणों की एक नृत्तमातृका होती हैं और दो, तीन या चार मातृकाओं का एक **अङ्गहार** होता है। **तीन करणों के योग से एक कलापक**, **चार करणों के योग से एक षण्डक और पाँच करणों के योग से संघातक का निर्माण** होता है, ऐसा कहा गया **है। छः, सात, आठ** तथा **नौ करणों** के संयोग से **अङ्गहार** बनते हैं ॥।

आचार्य भरतमुनि द्वारा निर्दिष्ट **करण** एवं **अङ्गहार** को अत्यधिक गम्भीरता से समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि **आचार्य भरतमुनि** ने करण से अङ्गहार निर्माण के पूर्व संख्या के आधार पर **मातृका, कलापक षण्डक और सङ्घातक** निर्माण करने की बात कही है।

दो करण के योग से	**= एक नृत्तमातृका**
दो, तीन, चार करण के योग से	**= अङ्गहार**
तीन करण के योग से	**= एक कलापक**
चार करण के योग से	**= एक षण्डक**
पांच करण के योग से	**= एक सङ्घातक**
छः,सात,आठ,नौ के योग करण से	**= एक अङ्गहार**

इस प्रकार यदि हम अङ्गहारों में **करणों** की सङ्ख्या के आधार पर यदि उन्हें अलग-अलग किया जाता है तो निम्नलिखित स्थिति स्पष्ट हो जाती है –

[12] नाट्यशास्त्र (४/३१)

[13] नाट्यशास्त्र (४/३२)

[14] नाट्यशास्त्र (४/३३)

३ करणों के योग से बनने वाली अड्गहारों की संख्या =४

४ करणों के योग से बनने वाली अड्गहारों की संख्या =५

५ करणों के योग से बनने वाली अड्गहारों की संख्या =४

६ करणों के योग से बनने वाली अड्गहारों की संख्या =४

७ करणों के योग से बनने वाली अड्गहारों की संख्या =५

८ करणों के योग से बनने वाली अड्गहारों की संख्या =५

९ करणों के योग से बनने वाली अड्गहारों की संख्या =२

१० करणों के योग से बनने वाली अड्गहारों की संख्या =४

आचार्य भरतमुनि द्वारा निर्दिष्ट उक्त वर्गीकरण के आधार पर यदि अड्गहारों पर दृष्टिपात किया जाय तो यह ज्ञात होता है कि **तीन** व **चार** करणों से **आचार्य भरतमुनि** ने एक अड्गहार एक कलापक व एक षण्डक का निर्माण प्रतिपादित किया है और अड्गहार निर्माण करना भी प्रतिपादित किया गया है उक्त तालिकाओं का अध्ययन करें तो ऐसे पाञ्च अड्गहार प्राप्त होते हैं, जिनका निर्माण ४ करणों अथवा दो -दो मातृकाओं के संयोग से हुई है। इस प्रकार ५ करणों के योग से जहां एक तरफ सङ्घातक के निर्माण को प्रतिपादित किया गया है, वही ५ करणों से अड्गहारों की प्राप्ति होती है। **आचार्य भरतमुनि** ने १० करणों के योग से अड्गहार निर्माण किये जाने के विषय में स्पष्ट उल्लेख नहीं किया हैं। (**कथक नृत्य शिक्षा भाग – पृष्ठ सङ्ख्या १६०)**[15]

आचार्य भरतमुनि के अनुसार **108 करणों** के संयोग से अड्गहारों की निष्पत्ति होती है। अड्गहार शब्द का सामान्य अर्थ है **अड्गों की गति। आचार्य अभिनवगुप्त** ने अड्गहार शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है" **अड्गों के समुचित सञ्चालन को अड्गहार** "कहा है। यह शिवजी का हार अर्थात् प्रयोग है संक्षेप में यह कह सकते है कि अड्गहार प्रधान नृत्य प्रकार है जो संक्षिप्त करणों द्वारा निष्पन्न होता है। इस प्रकार अड्ग सञ्चालन का एक सुनिश्चित अनुक्रम है। एक से अधिक करणों के सामञ्जस्य से ही नृत्य का निर्माण होता है. जो सङ्ख्यागत आधिक्य होने पर सञ्चालित होते हुए स्पष्ट स्वरूप को प्राप्त करता जाता है। इस प्रकार यहाँ सर्वत्र दो अधिक सङ्ख्या का मेल वाञ्छित है। ये तीन करणों के मेल वाले भेद कलापक से लेकर नौ करणों के सङ्घातक तक बनते है और इस प्रकार

---

[15] कथक नृत्य शक्षा , डॉ दाधीच पुरू, भाग २- १६०

समुदाय का निर्माण कर अङ्गहार निर्माण करते है। इस तरह से सभी अङ्गहार करणों से ही निष्पन्न होते हैं।**(ना०शा० पृष्ठ सङ्ख्या २८५)**[16]

इस प्रकार अङ्गहार में करणों का प्रयोग होता है। कुछ आचार्यगण इन अङ्गहारों में अभिहित अङ्गों एवं करणों का चारों दिशाओं में प्रस्तुतिकरण का निर्देश करते हैं। **आचार्य भरतमुनि** ने स्वयं भी परिवृत्त रेचित अङ्गहार के प्रसङ्ग में इस ओर सङ्केत किया है कि इस सन्दर्भ में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि प्रत्येक करण सम्पन्न करने में जो समय लगता है,उसको मिलाकर प्रमाण के अनुसार जो निश्चित काल हो, वही एक अङ्गहार में लगने वाला अवधि होगा।

अङ्गहार के भेद-

आचार्य भरतमुनि ने कुल 32 अङ्गहारों को प्रतिपादित किया है-

स्थिरहस्तोऽङ्गहारस्तु तथा 'पर्यस्तकः स्मृतः ॥ (ना०शा०४/१९)

सूचीविद्धस्तथा चैव ह्यपविद्धस्तथैव च ।

'आक्षिप्तकोऽथ विज्ञेयस्तथा चोद्धट्टितः स्मृतः ॥ (ना०शा०४/२०)

विष्कम्भश्चैव सम्प्रोक्तस्तथा चैवापराजितः ।

"विष्कम्भापसृतश्चैव मत्ताक्रीडस्तथैव च ॥ (ना०शा०४/२१)

स्वस्तिको रेचितश्चैव पार्श्वस्वस्तिक एव च ।

वृश्चिकापसृतः प्रोक्तो भ्रमरश्च तथापरः ॥ (ना०शा०४/२२)

'मत्तस्खलितकश्चैव मदाद्विलसितस्तथा ।

"गतिमण्डलको ज्ञेयः परिच्छिन्नस्तथैव च ॥ (ना०शा०४/२३)

"परिवृत्तचितोऽथ स्यात्तथा वैशाखरेचितः

परावृत्तोऽथ विज्ञेयस्तथा चैवाप्यलातकः ॥ (ना०शा०४/२४)

पार्श्वच्छेदोऽथ सम्प्रोक्तो विद्युद्भ्रान्तस्तथैव च ।

"ऊरुद्वृत्तस्तथा चैव स्यादालीढस्तथैव च ॥ (ना०शा०४/२५)

[16] नाट्यशास्त्र पारस नाथ द् ववेदी (प्रथम भाग पृष्ठ सङ्ख्या-२८५)

"रेचितश्चापि विज्ञेयस्तथैवाच्छुरितः स्मृतः

आक्षिप्तरेचितश्चैव सम्भ्रान्तश्च तथापरः ॥ (ना०शा०४/२६)

अपसर्पस्तु विज्ञेयस्तथा चार्धनिकुट्टकः ।

द्वात्रिंशदेते सम्प्रोक्ता अङ्हारास्तु नामतः ॥ (ना०शा०४/१९.....२७ पृष्ठ सङ्ख्या २८०)[17]

इनमें सोलह त्र्यस्त्राल से और सोलह चतुरस्त्राल से सम्बन्धित है जो निम्नलिखित प्रकार से है-

१.स्थिरहस्त २. पर्यस्तक ३.सूचीविद्ध ४.अपविद्ध ५.आक्षिप्तक ६.उद्घट्टित ७. विष्कम्भक ८. अपराजित ९.विष्कम्भापसृत १०.अथमत्ताक्रीडः ११. स्वास्तिकरेचित १२. अथपार्श्वस्वस्तिक १३. अथवृश्चिकापसृत १४. भ्रमर १५. मत्तस्खलित १६. मदविलसित १७.गतिमण्डल १८. परिच्छिन्न १९. -परिवृत्तचित २०. वैशाखरेचित २१. परावृत २२. अलातक२३. पार्श्वच्छेदक २४. विद्युद्भ्रान्त २५. उरुवृत्त २६. आलीढ़ २७. रेचित २८. आच्छुरित २९. आक्षिप्तरेचित ३०. सम्भ्रान्त ३१. अपसर्प ३२. अर्धनिकुट्टक अङ्गहारों के ये बत्तीस नाम कहे गये हैं। (ना०शा० पृष्ठ सङ्ख्या २८०)[18]

'**करण**' और '**अङ्गहारों**' के बाद नृत्त' का महत्वपूर्ण तत्त्व है- रेचक करण-अङ्गहार के रङ्गरूप में तो रेचक का प्रयोग होता ही है. इनके अतिरिक्त भी नृत्त और नृत्य के विभिन्न प्रयोगों में इसकी योजना की जाती है। सुकुमार गति और वाद्यगत प्रधानता रखने वाले प्रयोग भी रेचक से युक्त रखते हैं। इन करणों से रेचक का स्वतन्त्र महत्त्व माना गया है। रेचक या रेचित प्रक्रिया अङ्गों के पृथक् -पृथक् व्यवस्थित रूप में चलन या चक्करदार घुमाव को कहते है अथवा इसे रेचक इसलिए भी कहते हैं कि यह ऊर्ध्व भाग की ओर गतिशील होता है। इसके चार प्रकार हैं- **पादरेचक, कटिरेचक, हस्त या कररेचक और ग्रीवारेचक।"**

(कथक नृत्य शिक्षा भाग २, पृष्ठ सङ्ख्या १६४)[19]

आचार्य भरतमुनि के मतानुसार इन रेचक तथा **अङ्गहारों** से युक्त शिव को नृत्य करते देख पार्वती ने भी सुकुमार प्रयोगों से युक्त एक लास्य नृत्य किया और इस नृत्य की मृदङ्ग, भेरी पटह, भाण्ड, डिण्डिम, गोमुख, पणव तथा दर्दुर

---

[17] नाट्यशास्त्र(४/१९..२७)

[18] नाट्यशास्त्र (प्रथम भाग चतुर्थ अध्याय पृष्ठ सङ्ख्या - २८०)

[19] कथक नृत्य शक्षा डॉ दाधीच पुरू (भाग २ पृष्ठ सङ्ख्या १६५)

नामक वाद्यों द्वारा संगत की गई। ऐसा होने पर दक्ष के यज्ञ के ध्वंस के पश्चात् किसी संख्या में भगवान् शिव ने अनेक लय तथा ताल के अनुसार अङ्गहार से युक्त होकर नृत्य किया।(**ना०शा० ४/२५१,२५२)**[20]

इस प्रकार भगवान् **शिव** ने **रेचक**, **अङ्गहार** तथा पिण्डीबन्धों के सृजन कार्य को पूर्ण करने के पश्चात् उन्हें **तण्डु** मुनि को प्रदान कर दिया, तब तण्डु मुनि ने उन्हें गान तथा भाण्ड वाद्य (वाद्य तथा गीत) से ठीक प्रकार से संयुक्त कर जिस नृत्त प्रयोग की सर्जना की वह **ताण्डव** नाम से प्रसिद्ध हुआ। (तण्डु के द्वारा उद्भावित होने के कारण उसकी प्रसिद्धी ताण्डव नाम से हुई।(**ना०शा० ४/२६१,२६२)**[21]

अङ्गहार का प्रयोग –

आचार्य भरतमुनि कहते हैं कि पूर्वरङ्ग विधान में **अङ्गहारों** का सम्यक रूप से प्रयोग करना चाहिए। **वर्धमानक, योग** ,**गीतों** ,**आसारितों** और **महागीतों** में सम्यक रूप से प्रयोग करने पर अभिनय भी सम्यक रूप से कर सकोगे-

" पूर्वरङ्गविधास्मिस्त्वया सम्यक्प्रयोज्यताम् ।

वर्धमानकयोगेषु गीतेष्वासारितेषु च ॥

महागीतेषु चैवार्थान्सम्यगेवाभिनेष्यसि " । (ना०शा० ४/१४..१५)[22]

निष्कर्ष -

'नाट्यशास्त्र' में वर्णित '**करण**' और '**अङ्गहार**' केवल नृत्य-तकनीक नहीं, बल्कि भारतीय सौन्दर्य और दर्शन का गहन वैज्ञानिक स्वरूप हैं। **'करण'** अङ्ग की सूक्ष्म गतियाँ हैं जो मन, बुद्धि और चेतना के सहयोग से रसोत्पत्ति की प्रक्रिया को निष्पन्न करती हैं। अङ्गहार इन गतियों का समाहार हैं जो नृत्य की संरचना, गति और भाव-पथ को दिशा देते हैं। दोनों मिलकर नृत्य को केवल शारीरिक क्रिया नहीं रहने देते; वे उसे मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और सौन्दर्यपरक ऊँचाइयों तक उत्कर्ष प्रदान करते हैं।

समकालीन कला और स्वास्थ्य-विज्ञान में इनके महत्व में पुनः अभिवृद्धि हो रहा है, क्योंकि ये मन-**शारीरिक-सन्तुलन, मानसिक, शान्ति,** अङ्ग के वैज्ञानिक व्यायाम तथा भावाभिव्यक्ति के सशक्त साधन हैं। इस प्रकार **करण**

---

[20] नाट्यशास्त्र (प्रथम भाग चतुर्थ अध्याय ४/२५१,२५२ पृष्ठ सङ्ख्या - १३३)

[21] नाट्यशास्त्र - श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री (४/२६१,२६२)

[22] नाट्यशास्त्र-पारस नाथ द् ववेदी (४/१४...१५)

और **अङ्गहार** भारतीय नृत्य-दर्शन की अनिवार्य धरोहर हैं जिनकी वैचारिक उपादेयता आज भी स्थायी और प्रासङ्गिक है।

इस प्रकार स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, कि नाट्यचार्यों ने हस्त मुद्राओं एवं पाद-सञ्चालन के संयोजन से करणों का निर्माण कर नृत्त एवं नृत्य की उत्पत्ति की। जो सभी शास्त्रीय नृत्यों के मूल में समाहित है।परन्तु प्रतीत होता है कि **१०८ करणों** से **३२ अङ्गहार** के निर्माण की बात , जो प्रायः नृत्यकला के क्षेत्र में बहुप्रचलित है,तर्कसङ्गत प्रतीत नहीं होती। इसी प्रकार अङ्गहारों के अध्ययन में तीन अन्य करण भी उल्लिखित प्राप्त होते है. इस दृष्टि से **नाट्यशास्त्र** में **करणों** की संख्या **111** होनी चाहिए। साथ-ही-साथ जिन करणों का प्रयोग अङ्गहारों में नहीं हुआ है, नवीन अङ्गहारों के निर्माण की सम्भावना को उद्धृत करता है।अतः नाट्यशास्त्र में वर्णित **करण एवं अङ्गहार** विषयक तथ्यों पर विस्तृत शोध अनिवार्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची -

1. भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र- सम्पादक एवं व्याख्याकार- श्री बाबू लाल शुक्ल, चौखम्बा

2. भारतीय नाट्यशास्त्र की परम्परा एवं विश्वरंगमय- राधावल्लभत्रिपाठी।

3. भरतमुनिप्रणीत नाट्यशास्त्र- सम्पादक एवं व्याख्याकार-पारसनाथ द्विवेदी।

4. भारतीय तथा पाश्चात्य रंगमंच पं० सीताराम चतुर्वेदी।

5. भरतमुनिप्रणीत नाट्यशास्त्र सम्पादक, अनुवादक, टिप्पणीकार- महामहोपाध्याय आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी।

6. नाट्यशास्त्र और रंगमंच, सम्पादक-दीनानाथ साहनी प्रकाशन की तारीख - 1 जनवरी 2011।

7. नाट्यशास्त्र, सम्पादक एवं व्याख्याकार- प्रो० ब्रजमोहन चतुर्वेदी।

8. नाट्यशास्त्र, सम्पादक एवं व्याख्याकार- श्री कृष्ण जुगनू एवं सुधारस्तोगी-चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी।

9. नाट्यशास्त्र- सम्पादक एवं व्याख्याकार- पण्डित बटुकनाथ शर्मा और बलदेव उपाध्याय।

10. नाट्यशास्त्रीय अभिनय सिद्धान्त एवं प्रयोग- लेखिका एवं सम्पादिका- डॉ० अर्चना अग्रवाल

11. श्री भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र (200 वर्ष), सम्पादक डॉ० पारसनाथ द्विवेदी, प्रकाशन- (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)

डॉ पुरु दाधीच कथक नृत्य

12 श्रीभरतमुनिप्रणीत सचित्रम् नाट्यशास्त्र संपादक एवं व्याख्याकार -श्री बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बासंस्कृत संस्थान , वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1999 माग-1 अध्याय-४, श्लोक -२५१,२५३

13 .श्रीभरतमुनिप्रणीत सचित्रम् नाट्यशास्त्र संपादक एवं व्याख्याकार -श्री बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बा ,संस्कृत संस्थान , वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1999 माग-1 अध्याय-४ श्लोक -201-202